बुन्देलखण्ड का स्वतन्त्रता संघर्ष

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में बुन्देलखण्ड की भूमिका

• बी.के.श्रीवास्तव •

Scanned with OKEN Scanner

Cataloging in Publication Data — DK
[Courtesy: D.K. Agencies (P) Ltd. <docinfo@dkagencies.com>]

Śrīvāstava, Brajeśa Kumāra, 1968- author.
Bundelakhaṇḍa kā svatantratā saṅgharṣa : Bhāratīya svatantratā saṅgharṣa meṁ Bundelakhaṇḍa kī bhūmikā / Brajeśa Kumāra Śrīvāstava.
pages cm
In Hindi.
On the role of Bundelkhand, India, in the Indian freedom struggle.
Includes bibliographical references.
ISBN 9788124610190 (Hb)

1. Bundelkhand (India) – History – Autonomy and independence movements. 2. Bundelkhand (India) – Politics and government – 19th century. 3. Bundelkhand (India) – Politics and government – 20h century. I. Title.

LCC DS485.B7S65 2019 | DDC 954.2 23

ISBN: 978-81-246-1019-0 (सजिल्द)
978-81-246-1020-6 (अजिल्द)
प्रथम प्रकाशन वर्ष, 2020
© लेखक

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश या पूरे का प्रतिलिपिकरण, ऐसे यन्त्र में भण्डारण जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानान्तरण (किसी भी रूप में या किसी भी विधि जैसे इलेक्ट्रॉनिक, यान्त्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य तरीके से) कॉपीराइट धारक एवं प्रकाशक की पूर्वलिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

मुद्रक एवं प्रकाशक :
डी.के. प्रिण्टवर्ल्ड (प्रा.) लि.
पंजीकृत कार्यालय : "वेदश्री", एफ-395, सुदर्शन पार्क
मेट्रो स्टेशन : ई.एस.आइ. हॉस्पिटल, नई दिल्ली - 110015
दूरभाष : (011) 25453975, 25466019
ई-मेल : indology@dkprintworld.com
वेब : www.dkprintworld.com

Scanned with OKEN Scanner

विषय-सूची

	भूमिका	v
	बुन्देलखण्ड का मानचित्र	xi
1.	1858 ई॰ से 1920 ई॰ के दौरान सागर में राजनीतिक चेतना का प्रसार	1
2.	1920 ई॰ का रतौना आन्दोलन	13
3.	रतौना आन्दोलन में समाचार-पत्रों की भूमिका	31
4.	सागर में 1857 की क्रान्ति एवं 1920 के रतौना आन्दोलन का तुलनात्मक अध्ययन	45
5.	1920 ई॰ के असहयोग आन्दोलन में सागर	53
6.	1923 ई॰ का झण्डा सत्याग्रह	69
7.	झण्डा सत्याग्रह में मास्टर बलदेव प्रसाद एवं समाचार-पत्रों की भूमिका	79
8.	1930 का सविनय अवज्ञा आन्दोलन/जंगल सत्याग्रह	91
9.	बैतूल एवं सिवनी का जंगल सत्याग्रह	103
10.	जंगल सत्याग्रह में टीकमगढ़ के लालाराम बाजपेयी की भूमिका	109
11.	बुन्देलखण्ड में गाँधीजी का आगमन	115

Scanned with OKEN Scanner

12. सागर में व्यक्तिगत सत्याग्रह
13. सागर में 1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन 123
14. भाई अब्दुल गनी की राष्ट्रवादी चेतना 135
15. सागर के स्वतन्त्रता संघर्ष में पं॰ ज्वाला प्रसाद ज्योतिषी की भूमिका 151 165
16. दमोह में स्वतन्त्रता संघर्ष
17. पन्ना में स्वतन्त्रता संघर्ष 173
18. छतरपुर में स्वतन्त्रता संघर्ष 181
19. छतरपुर का चरण-पादुका हत्याकाण्ड 187
20. टीकमगढ़ में स्वतन्त्रता संघर्ष 195
21. बुन्देलखण्ड की रियासतों में प्रजा-मण्डल की स्थापना 209
22. ओरछा सेवा संघ, बुन्देलखण्ड सेवा संघ एवं बुन्देलखण्ड की रियासतों में पूर्ण उत्तरदायी शासन की स्थापना 217 231
23. झाँसी में स्वतन्त्रता संघर्ष
24. गोवा मुक्ति आन्दोलन (1955-1961 ई॰) एवं उसमें सागर जिले की भूमिका 241 253
25. स्वतन्त्रता संघर्ष के दौरान बुन्देली लोक-काव्य द्वारा राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जागरण 269
सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची 279

Scanned with OKEN Scanner

प्रस्तुत पुस्तक भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष में बुन्देलखण्ड की जनता के योगदान को सामने लाने का एक प्रयास है। गाँधीजी की बुन्देलखण्ड यात्रा एवं बुन्देलखण्ड में चन्द्रशेखर आजाद के हरिशंकर ब्रह्मचारी के नाम से कुटिया बनाकर रहने से समस्त बुन्देलखण्ड में तेजी से राष्ट्रवादी भावनाओं का प्रसार हुआ। 1923 के झण्डा सत्याग्रह एवं 1930 के जंगल सत्याग्रह में बुन्देलखण्ड के लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। ब्रिटिश भक्त देशी रियासत के राजाओं ने जब जनता पर अत्याचार किया तो जनता ने प्रजामण्डल की स्थापना कर उनका विरोध किया। इसी विरोध स्वरूप संक्रान्ति के मेले के दिन 14 जनवरी 1931 को छतरपुर जिले में जलियाँवाला बाग की तरह ही चरण-पादुका हत्याकाण्ड घटित हुआ। 1920 में रतौना में खोले जाने वाले कसाईखाने के विरोध में रतौना आन्दोलन हुआ। पं॰ माखनलाल चतुर्वेदी ने कर्मवीर समाचार-पत्र के माध्यम से इसका प्रखर विरोध किया। सरकार को घबराकर अपनी कसाईखाना खोलने की योजना त्यागनी पड़ी। यह एक ओर बुन्देलखण्ड की धरती पर अंग्रेज़ों की करारी शिकस्त थी, तो दूसरी ओर पं॰ माखनलाल चतुर्वेदी की पत्रकारिता की महत्वपूर्ण जीत थी।

सागर के भाई अब्दुलगनी, ज्वाला प्रसाद ज्योतिषी, केशवराव खाण्डेकर एवं मास्टर बलदेव प्रसाद; दमोह के भैयालाल चौधरी; अजयगढ़ पन्ना के चंदीदीन चौरहा; छतरपुर के पं॰ रामसहाय तिवारी; टीकमगढ़ के लालाराम वाजपेयी एवं झाँसी के भगवानदास माहौर आदि ने बुन्देलखण्ड के स्वतन्त्रता संघर्ष को गति, दिशा एवं अर्थ प्रदान किया। इन्हें पं॰ द्वारका प्रसाद मिश्र एवं पं॰ सुन्दरलाल तपस्वी का कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन मिला। गोवा मुक्ति आन्दोलन में भी सागर की सहोदरा राय एवं केसरी चन्द मेहता सहित अनेक सत्याग्रहियों ने गोवा जाकर आन्दोलन को सफल बनाया। उक्त सभी घटनाक्रम की रोचक, सहज, सरल, सुबोध एवं तथ्यपरक जानकारी इस पुस्तक में दी गई है। छात्रों, शोधार्थियों, शिक्षक बन्धुओं सहित प्रत्येक वर्ग के लोगों को यह पुस्तक ज्ञानवर्धक एवं रुचिकर लगेगी।

डॉ॰ बी॰के॰ श्रीवास्तव का जन्म 2 मई 1968 को हुआ था। उनकी 40 से अधिक पुस्तकें तथा 100 से अधिक शोध आलेख प्रकाशित हो चुके हैं एवं 80 से अधिक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों में उन्होंने अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए हैं। भारत की विभिन्न शोध पत्रिकाओं में वे सम्पादक, सह-सम्पादक एवं सदस्य सलाहकार-मण्डल हैं। वे वर्तमान में मध्यप्रदेश इतिहास परिषद् के अध्यक्ष हैं, इसके अलावा राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न अकादमिक संस्थाओं में वे अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष एवं आजीवन सदस्य के रूप में भी जुड़े हुए हैं। वर्तमान में वह डॉ॰ हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में प्रोफेसर एवं अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

DKPW
₹ 300
978-81-246-1020-6
9 788124 610206

Scanned with OKEN Scanner